International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकार्यवाद : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

डा. अवधेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
बुद्ध पीजी कॉलेज कुशीनगर

आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धान्त प्रकार्यवाद विश्लेषण द्वारा गम्भीर रूप से प्रभावित है। के. डेविस (Kingsley Davis) का कहना है कि समाजशास्त्र में आज जो कुछ है, उसका तीन चौथाई भाग प्रकार्यवाद है। वैसे यह वाद नवीन नहीं है। समाज विज्ञान एवं प्राकृतिक विज्ञानी में इसकी चर्चा बहुत पहले भी होती रही है। प्रकार्यवाद के बारे में विश्लेषण करने वालों में हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spenser), एमील दुखीम (Emile Durkheim), ए. आर रेडक्लिफ ब्राउन (A. R. Radcliffe Brown), बी मैलिनोवस्की (B. Malinowski), टी पारसन्स (T. Parsons), आर के मर्टन (RK Merton), एम. लेवी (Marion Levy), के डेविस (K. Davis) आदि मुख्य हैं।प्रकार्यवाद एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का उपागम है जो सामाजिक तत्वों एवं सांस्कृतिक प्रतिमानों के विभिन्न तत्वों और साथ ही साथ सम्पूर्ण व्यवस्था के ऊपर पड़ने वाले परिणामों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करने का प्रयास करता है। जिस प्रकार मानव शरीर की रचना विभिन्न अंगों के सम्मिलन से होती है तथा इन अंगों के स्वयं के भी अलग-अलग प्रकार्य होते हैं, उसी प्रकार समाज की संरचना विभिन्न संस्थाओं, मूल्यों, प्रतिमानों आदि के सम्मिलन से होती है। इन सबके अपने प्रकार्य होते हैं तथा समाज के रूप में संयुक्त हो जाने के बाद इनके अपने अलग प्रकार्य हो जाते हैं। इस प्रकार इस उपागम में एक ओर संरचना को महत्वपूर्ण माना जाता है, तो दूसरी ओर इसके द्वारा सम्पादित प्रकार्यों को महत्वपूर्ण माना जाता है।जो बेली (Joe Bailey) ने सोशल थ्योरी फॉर प्लानिंग (Social Theory for Planning) में प्रकार्यवाद को स्पष्ट करते हुए लिखा है, प्रकार्यवादी सिद्धान्त वह है जो सामाजिक प्रघटना का स्पष्टीकरण उस भूमिका के रूप में करता है जो इसके द्वारा व्यापक समाज के अस्तित्व एवं जीवन के लिए सम्पन्न की जाती है। अधिक व्यापक रूप में प्रकार्यवाद का सम्बन्ध एक सामाजिक व्यवस्था के भागों के अन्त सम्बन्ध तथा अन्त निर्भरता से है।"इस परिभाषा से स्पष्ट होता है-(1) प्रकार्यवाद एक सिद्धान्त है। (2) इसके द्वारा सामाजिक घटना की व्याख्या उनके प्रकार्यों यानि भूमिका के सन्दर्भ में की जाती है जो समाज के हित में होती है। (3) इस सिद्धान्त का सम्बन्ध सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न भागों के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों व निर्भरता से है।डेविड सी. किंग तथा मारविन आर. कोलर (David C. King and Marvin R. Koller) ने 'फाउण्डेशन्स ऑफ सोशियोलॉजी' (Foundations of Sociology) में लिखा है, "प्रकार्यवाद मानव समाज का एक उपागम है जो सभी अंगों के अन्त सम्बन्धित प्रकार्यों पर जोर देता है।" ("Functionalism is an approach to human society that emphasizes the interrelated functions of all parts.") इस कथन से पता चलता है- (1) प्रकार्यवाद एक समाजशास्त्रीय उपागम या दृष्टिकोण है। (2) इसके माध्यम से समाज के विभिन्न तत्वों के बीच पाये जाने वाले प्रकार्यों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करने का प्रयास किया जाता है। आर. के. मर्टन (R. K. Merton) ने 'सोशल थ्योरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर' में लिखा है, प्रकार्यवाद समाज की बड़ी संरचना पर उनके परिणामों को स्थापित करते हुए आँकड़ों की व्याख्या करता है।" इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि प्रकार्य का अभिप्राय समाज की संरचना के कार्य से है। प्रकार्यवादियों के लिये 'प्रकार्य' कारण है तथा संरचना उसका परिणाम।के. डेविस (K. Davis) के अनुसार, प्रकार्यवाद समाजों के साथ उसके अन्त सम्पर्क के रूप में प्रघटना की व्याख्या है।" इस उपागम का आधारभूत विचार यह है कि समाज अनेक भागों एवं अन्तः सम्बन्धों के आधार पर बना है। इन सम्बन्धों के आधार पर व्यवस्था का निर्माण होता है जिसकी प्रकृति समन्वित व पूर्णता लिये हुए होती है। अतः यह उपागम पूर्णता को महत्व देता है। वैसे अन्य इकाइयों का महत्व समान है।इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आलोक में कहा जा सकता है कि प्रकार्यवाद समाज की पूर्णता को स्वीकार करता है तथा उसके विभिन्न अंगों के प्रकार्यों के आधार पर सामाजिक संरचना की व्याख्या करता है। अतः प्रकार्यवाद दृष्टिकोण या विचारधारा की आधारभूत मान्यताएँ निम्न हैं-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(1) प्रकार्यवाद समाज को एक व्यवस्था मानता है।

(2) व्यवस्था के विभिन्न भाग या इकाइयाँ परस्पर अन्तः सम्बन्धित व अन्त निर्भर होते हैं।

(3) व्यवस्था के सभी भाग समन्वयता, अनुकूलता एवं सामंजस्य लाते हैं।

(4) किसी भी संरचना का अस्तित्व उसके द्वारा व्यवस्था के लिए किए गए प्रकार्यों के द्वारा समझा जा सकता है।

(5) यह प्रकार्य व्यवस्था के लिए आवश्यक एवं लाभकारी होते हैं।

बी. मैलिनोवस्की (B. Malinowski), मैरियन लेवी (Marion Levy), व के. डेविस (K. Davis) आदि के प्रकार्यवादी विश्लेषण से प्रकार्यवाद के तीन स्वरूप उजागर होते हैं। ये निम्न हैं-

1. सिद्धान्त के रूप में प्रकार्यवाद (Functionalism As Theory) - के. डेविस (K. Davis) की मान्यता है कि प्रकार्यवादी विश्लेषण समाजशास्त्रीय विश्लेषण के समान है। उनका कहना है किप्रकार्यवादी विश्लेषण के बारे में विवाद खत्म किया जाना चाहिए, क्योंकि इसकी कोई विशेष विश्लेषण पद्धति नहीं है। प्रकार्यवादी विश्लेषण स्वतः समाजशास्त्रीय विश्लेषण नहीं है। प्रकार्यवाद पर सहमति न होने का अर्थ है कि समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर सहमति नहीं है। डेविस का कहना है कि प्रकार्यवाद की विधियाँ विज्ञान की विधियों है तथा वे ही विधियाँ समाजशास्त्र की भी है। उनका यह कहना है कि जो कुछ समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के क्षेत्र में नहीं आता, वह सब प्रकार्यवाद के क्षेत्र में भी नहीं आता।

2. पद्धति के रूप में प्रकार्यवाद (Functionalism As Method)- जार्ज. सी. हॉमन्स (George C. Homans), विल्सन (Wilson) आदि अनेक समाजशास्त्रियों का मानना है कि प्रकार्यवाद एक सिद्धान्त नहीं है, बल्कि सिद्धान्त निर्माण की एक पद्धति है। सिद्धान्तं होने के लिए कुछ गुण तथा उनमें सम्बन्ध स्थापित करने वाली प्रस्थापनाओं का होना आवश्यक है। प्रकार्यवाद में समाज व्यवस्था के सम्बन्ध में प्रस्थापनायें नहीं हैं। ये समाज व्यवस्था के अध्ययन के लिए कुछ दिशा-निर्द देते हैं। सिद्धान्त होने के लिए दो घटनाओं के बीच कारणात्मक नियम के सदृश सम्बन्धों का दर्शाया जाना आवश्यक होता है। फिर सिद्धान्त में सत्यापन या गलत प्रमाणित किये जाने की क्षमता होनी चाहिए। प्रकार्यात्मक विश्लेषण में ये नहीं पाये जाते प्रकार्यवाद एक सोद्देश्य यांत्रिकी है। इस प्रकार यह सिद्धान्त निर्माण की एक पद्धति मात्र है।

3. परिप्रेक्ष्य के रूप में प्रकार्यवाद (Functionalism As Approach)- अलेक्स इंकेलेस (Alex Inkeles) का मानना है कि प्रकार्यवाद एक परिप्रेक्ष्य है। प्रकार्यवादी दृष्टिकोण का मूल समाज व उसकी संस्थाओं में अन्त सम्बन्ध है। इसकी मुख्य संपृच्छा होती है, सामाजिक जीवन कैसे परिचालित होता है, विशेषतः जब एक पीढ़ी बीत जाती है तथा नई पीढ़ी उसका स्थान ग्रहण करती है। यह परिप्रेक्ष्य इस तथ्य पर भी प्रकाश डालता है कि किस प्रकार विभिन्न सरचना सम्पूर्ण समाज की एकता को बनाये रखने के लिए एकीकृत व अन्त निर्भर रहती है। साथ ही समाज की अनेक प्रथाओं व लक्षणों को उद्घाटित करना भी इसका परिप्रेक्ष्य रहा है। इंकेलेस (Inkeles) ने लिखा है, प्रत्येक समाजशास्त्री कुछ सीमा तक प्रकार्यवादी होता है क्योंकि बहुत कम ऐसे हैं जो सामाजिक जीवन में व्यवस्था के अस्तित्व को नकारते हैं।जोनाथन टर्नर (Jonathan Turner) ने प्रकार्यवाद के चार प्रकारों का उल्लेख किया है। ये हैं - (1) संरचनात्मक प्रकार्यवाद, जिसकी शुरूआत एमील दुर्खीम से होती है। इसमें कारणात्मक तथा प्रकार्यात्मक विश्लेषण को पृथक किया जाता है। (2) यांत्रिकी - सन्तुलन प्रकार्यात्मक विश्लेषण टॉलकाट पारसन्स ने ऐसी व्यवस्था की कल्पना की जिसमें सन्तुलन स्थिति पाई जाती है तथा किस प्रकार सामान्यीकृत यांत्रिकी सन्तुलन की स्थिति बनाये रखने का कार्य करती है। (3) प्रकार्यात्मक अपरिहार्यता या अपेक्षित प्रकार्यवाद कालान्तर में पारसन्स ने प्रकार्यात्मक पूर्व आवश्यकताओं पर बल देना प्रारम्भ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किया तथा प्रकार्यवाद को विकसित किया। (4) वास्तविक प्रकार्यात्मक सन्तुलन विश्लेषण : रॉबर्ट के मर्टन ने प्रकार्य के साथ अकार्य पर विशेष बल दिया है। इस प्रकार प्रकार्य वास्तविक सन्तुलन एक आवश्यक विषय बनकर आया है।

हर्बर्ट स्पेन्सर को प्रकार्यवाद का अग्रदूत माना जा सकता है। इन्होंने ही सर्वप्रथम चार्ल्स डारविन (Charles Darwin) के 'प्राणीशास्त्रीय उद्विकास (Biological Evolution) के सिद्धान्त के आधार पर सामाजिक प्रकार्य के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके अनुसार सावयव (Organism) तथा समाज में कुछ आधारभूत समानतायें होने के कारण एक के आधार पर दूसरे को समझा जा सकता है। इस सन्दर्भ में उन्होंने छः विशेषताओं का उल्लेख किया जिसके आधार पर दोनों के बीच समानता को उजागर किया है। ये निम्न हैं-

(i) जड़ पदार्थों से भिन्नता-समाज तथा सावयव में पहली समानता यह है कि ये दोनों जड़ पदार्थों से भिन्न हैं। जड़ पदार्थों में वृद्धि नहीं दिखाई देती, सदियों तक वे उतने-के-उतने पड़े रहते है। समाज तथा सावयव में देखते-देखते वृद्धि होती जाती है। जिस प्रकार बच्चा बड़ा होकर युवा व प्रौद बन जाता है, उसी प्रकार एक छोटा समाज एक बड़े समाज, राज्य व साम्राज्य में परिवर्तित होता है।

(ii) परिमाण में वृद्धि के साथ संरचना में विषमता समाज तथा सावयव में दूसरी समानता यह है कि दोनों ज्यों-ज्यों आकार में बढ़ते हैं त्यो त्यो इनकी संरचना में विषमता आती जाती है। शरीर शुरू में एक जीव-कोष्ठ होता है। इस जीव-कोष्ठ के अंग-प्रत्यंग नहीं होते, ज्यों-ज्यों यह बड़ा होने लगता है, त्यों-त्यों इसके अंग-प्रत्यंग विकसित होने लगते हैं। इसी प्रकार समाज प्रारम्भ में सरल अवस्था में होता है। एक ही व्यक्ति शिकारी, कारीगर घर का काम करने वाला आदि सब कुछ होता है, परन्तु ज्यों-ज्यों समाज विकसित होने लगता है, भिन्न-भिन्न पेशों के लोग विकसित होते जाते हैं।

(iii) परिमाण में वृद्धि के साथ संरचना में विषमता समाज और सावयव में तीसरी समानता यह है कि इन दोनों की संरचना में विभेदीकरण के साथ-साथ इनके कार्यों का विभेदीकरण बढ़ता जाता है। हाथ से पकड़ना व पैर से चलना ही नहीं, हाथ से लिखना व गाड़ी चलाना और पैर से साइकिल चलाना व गेंद खेलना भी होने लगता है। अन्य अनेक काम भी इन अंगों से मनुष्य करने लगता है। समाज में भी अंग-प्रत्यंग के रूप में भिन्न-भिन्न समुदाय उत्पन्न होते हैं। इन समुदायों के काम दिनों-दिन बढ़ते जाते हैं।

(iv) कार्य की विषमता होते हुए इन विषमताओं का एक-दूसरे से समन्वय समाज और सावयव में चौथी समानता यह है कि दोनों में ही विभेदीकरण के साथ-साथ विभिन्न अंगों में अन्त सम्बन्ध व अन्त निर्भरता देखने को मिलती है। शरीर के अंग हाथ, पैर, नाक, मुँह आदि के कार्य अलग-अलग हैं, लेकिन वे एक-दूसरे के पूरक हैं। अगर पैर फिसलता है तो हाथ शरीर को संभाल लेता है। शरीर के अंग व्यक्ति, परिवार, विभिन्न समुदाय आदि हैं। ये अपने-अपने कार्यों को पूरा करते हैं। इनके भिन्न-भिन्न कार्य समाज के सामूहिक कार्य में सहायक होते हैं।(v) अवयव की मृत्यु से सावयवी की मृत्यु नहीं होती-समाज और सावयव में पाँचवी समानता यह है कि किसी इकाई के नष्ट हो जाने से वह समाप्त नहीं होता। शरीर के किसी अंग हाथ या पैर या नाक आदि के चले जाने से शरीर नष्ट या समाप्त नहीं होता। वह ज्यों-का-त्यों बना रहता है। उसी प्रकार समाज में भी व्यक्तियों या परिवारों या कुछ समुदायों के नष्ट हो जाने से समाज समाप्त नहीं होता, वह ज्यों-का-त्यों बना रहता है।

(vi) समान प्रक्रियाएँ तथा प्रजातियाँ-समाज तथा सावयव में छठी समानता यह है कि दोनों के कार्य संचालन हेतु विभिन्न प्रक्रियाएँ व प्रणालियाँ भी समान हैं। शरीर में भोजन पचाने के लिए पाचन-संस्थान हैं, रक्त-संचालन के लिए नाड़ी-संस्थान, ज्ञान के लिए स्नायु-संस्थान हैं, आदि। इसी प्रकार समाज में व्यापार एवं वाणिज्य के रूप में प्रसारण व वितरण व्यवस्था है तथा आर्थिक रूप में महत्व प्रदान किया है। उन्होंने लिखा है, हमने प्रकार्य शब्द को लक्ष्य या उद्देश्य की तुलना में इसलिए महत्व दिया है कि सामाजिक

घटना प्रायः अपने उपयोगी परिणाम, जो कि उत्पन्न करती है के लिए अस्तित्व में नहीं रहती। एमील दुखीम ने इस बात पर बल देते हुए कहा है कि प्रत्येक सामाजिक घटना या तथ्य का एक कारण होता है, परन्तु उससे भी अधिक सत्य यह है कि सामाजिक व्यवस्था की स्थापना में उसका कोई-न-कोई प्रकार्य भी होता है, यानि सामाजिक व्यवस्था विभिन्न सामाजिक तथ्यों या घटनाओं के प्रकार्यों का परिणाम होती है। सामाजिक घटनाओं के इस प्रकार्यात्मक पक्ष की अवहेलना करके उन्हें वैज्ञानिक तौर पर समझा नहीं जा सकता। प्रत्येक सामाजिक घटना कोई-न-कोई प्रकार्य करती ही है। इस प्रकार जो क्रिया घटना समाज के लिए करती है, वही उसका प्रकार्य है। दुखीम ने 'श्रम-विभाजन के प्रकार्य' व 'धर्म के प्रकार्य की व्याख्या दी है।एमील दुखीम ने 1893 में तीन खण्ड़ों की अपनी पुस्तक समाज में श्रम विभाजन (The Division of Labour) के प्रथम खण्ड में श्रम विभाजन के प्रकार्यों का उल्लेख किया है। उनके अनुसार प्रकार्य शब्द का तात्पर्य यहाँ उन सम्बन्धों से है जो किसी सावयव के किसी अंग को गतिविधियों एवं पूर्ण सावयव की आवश्यकता के मध्य पाया जाता है। इसका अर्थ है-सावयव के अंग क्रियाशील हैं, फेफड़े वायु का संचार करते हैं, हृदय रक्त का तथा यह क्रिया सम्पूर्ण शरीर (सावयद) को जीवित बने रहने की प्राथमिक आवश्यकता पूर्ण करते हैं। समाज को सावयव के रूप में उसकी विभिन्न संस्थाओं को उसके अंगों में तथा उनकी गतिविधि द्वारा समाज को जीवित रखने के योगदान को ही प्रकार्य कहा गया है।श्रम विभाजन का प्रमुख प्रकार्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों में सुदृढ़ता (एकता) का सम्बन्ध उत्पन्न करना है। विभिन्न समाज व्यवस्थाओं में यौन आधारित श्रम विभाजन यह कार्य कर रहा है। वर्तमान समाज में यौन आधार पर विद्यमान श्रम विभाजन सामाजिक जीवन का मुख्य आधार है। श्रम विभाजन केवल आर्थिक ही नहीं, एक सामाजिक नियम भी है। इसलिये इसका नैतिक होना भी आवश्यक है। इसका नैतिक पक्ष ही इसे समाज में विद्यमान कानूनों से जोड़ता है। इस प्रकार दुर्खीम के अनुसार श्रम विभाजन का प्रकार्य सामाजिक सुदृढ़ता है। दुर्खीम ने सामाजिक सुदृढ़ता (Social Solidarity) के सन्दर्भ में लिखा है, "जब समाज मजबूती से एकात्मक होता है, तो वह अपने नियन्त्रण से व्यक्ति को बाँधे रखता है। ("When society is strongly integrated, it holds individuals under its control.") श्रम विभाजन से व्यक्तियों में पारस्परिक निर्भरता का विकास होता है। यह पारस्परिक निर्भरता सुदृढ़ता को जन्म देता है। दुर्खीम ने सामाजिक सुदृढ़ता के दो रूप बताये हैं-

1. यांत्रिक सुदृढ़ता या एकता (Mechanical Solidarity)- यांत्रिक सुदृढ़ता वह दशा है जिसमें व्यक्तिगत भिन्नताओं की कमी होती है और एक सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समाज के सदस्य निष्ठावान होते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति का जीवन सरल एवं एक समान होता है। उनमें व्यक्तिगत भिन्नताएँ नहीं होतीं, सबके विचार एवं व्यवहार एक से होते हैं और समाज को सर्वोपरि मानकर जीते हैं।

2. सावयवी सुदृढ़ता (Organismic Solidarity)-शुरू-शुरू के काल में जनसंख्या कम थी। इसलिए हर एक हर किसी काम को कर लेता था। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी, वैसे-वैसे आवश्यकताएँ बढ़ीं। इसका परिणाम हुआ कि भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न काम करने लगे। श्रम विभाजन की आवश्यकता महसूस की गई। फिर श्रम विभाजन में भी 'विशेषीकरण' (Specialization) होने लगा। इस प्रक्रिया में एक व्यक्ति को अपने कार्यों के बाद दूसरे अन्य कार्यों के लिये दूसरों पर निर्भर होना पड़ा। व्यक्तियों की इस पारस्परिक निर्भरता के फलस्वरूप जिस एकता का विकास हुआ, उसे ही दुर्खीम ने 'सावयवी सुदृढ़ता' कहा। इसी तरह दुर्खीम ने 'धर्म के प्रकार्यों (Functions of Religion) का उल्लेख किया है। ये प्रकार्य मूल रूप से चार हैं -

(1) समूह के लोगों को सामूहिक जीवन में भाग लेने तथा अनुशासन में रहने की प्रेरणा देना।

(2) सामाजिक एकता को बनाए रखना।

(3) समूह को पुनर्जीवन प्रदान करना।

(4) संवेगों और भावनाओं को संतुलन प्रदान करना।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ब्रोनिसला मैलिनोवस्की ने प्रकार्यवाद का मानवशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय चिन्तन के आधार पर विवेचन किया है। इनका 'प्रकार्यात्मक सिद्धान्त' (Functional Theory) ऑस्ट्रेलिया के आदिवासियों एवं ट्रोबीयाण्ड द्वीपवासियों के नृशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। प्रसिद्ध मानवशास्त्री ग्रिवनर (Graebner) ने प्रकार्य विरोधी सिद्धान्त की स्थापना करते हुए कहा कि आकार का प्रकार्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसके विपरीत मैलिनोवस्की का मानना है कि पृथक-पृथक लक्षणों का अध्ययन न कर उनका सम्पूर्ण से सम्बन्ध जानना आवश्यक है। उन्होंने लिखा है, प्रकार्य का निर्धारण सदैव आकार से होता है और जब तक इस प्रकार की निश्चयात्मकता नहीं हो जाती, आकार के तत्वों का प्रयोग वैज्ञानिक रूप से नहीं किया जा सकता। असम्बन्धित तथ्यों के प्रत्यय जिनका, मौलिक रूप से सम्बन्ध न स्थापित किया जा सके, बेकार है।"मैलिनोवस्की ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि मानव की कुछ निश्चित आवश्यकताएँ होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना सामाजिक प्राणी के रूप में उसका अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के सन्दर्भ में मानव संस्कृति का निर्माण करता है। संस्कृति के विभिन्न अंगों का एक विशिष्ट स्वरूप के साथ-साथ एक विशिष्ट प्रकार्य होता है। संस्कृति का प्रत्येक तत्व या इकाई का मानव के लिए महत्वपूर्ण प्रकार्य होता है। किसी भी सांस्कृतिक तत्व का अस्तित्व इसी बात पर निर्भर करता है कि मानव के किसी काम में आ रहा है या नहीं। मेलिनोवस्की के अनुसार प्रकार्य का तात्पर्य सदैव किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति है। ("Function means, therefore, always the satisfaction of a need.") मैलिनोवस्की ने आगे इस बात का उल्लेख किया है कि मानव की अनेक आर्थिक, सामाजिक व मानसिक आवश्यकताएँ है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के सन्दर्भ में मानव ने धर्म, कला, प्रविधि भाषा, साहित्य तथा अन्य भौतिक व अभौतिक (Material and Non-Material) वस्तुओं का निर्माण किया, जिनकी समग्रता को संस्कृति की संज्ञा दी जाती है। यदि ध्यान से इन संस्कृतिक तत्वामाण उत्पत्ति पर प्रकाश डाला जाय, तो स्पष्ट हो जायेगा कि इनमें से प्रत्येक की जड़ मानव की किसी-न-किसी आवश्यकता से है। मानव अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धनुष-चाकी से लेकर बड़ी-बड़ी मशीनों को उपयोग में लाता है। सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक संस्थाओं को काम में लाता है। फिर मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भाषा, धर्म कला आदि की मदद लेता है। इस प्रकार संस्कृति की इकाई का किसी-न-किसी रूप में कोई-न-कोई प्रकार्य अवश्य होता है। एक दीप को ही लिया जाय। यह दीप रोशनी देने का कार्य करता है, यह दीप धार्मिक जीवन का प्रतोक हो सकता है, किसी कम्पनी का व्यापार-चिन्ह या प्रतीक हो सकता है। किसी भी संस्कृति में इस दीप के समस्त प्रकार्यों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस दीप संस्कृति की अन्य सभी इकाईयों या पक्षों से जो प्रकार्यात्मक सम्बन्ध है, उन्हें ढूंढ़ निकालें। इसी तरह जब संस्कृति की प्रत्येक इकाई का अन्य इकाइयों से प्रकार्यात्मक सम्बन्ध मालूम कर लेंगे, तब हमें पता चलेगा कि उस समूह के सदस्यों की सम्पूर्ण जीवन विधि को बनाये रखने में वे इकाइयाँ किस प्रकार से मिलकर प्रकार्य करती है।इस प्रकार मैलिनोवस्की का कहना है कि संस्कृति की प्रत्येक इकाई का एक-दूसरे के साथ प्रकार्यात्मक सम्बन्ध होता है। ऐसा इसलिए होता है कि मानवीय आवश्यकताएँ अलग-अलग नहीं हैं, वे एक-दूसरे के साथ सम्बन्धित हैं तथा इन सब का उद्भव स्थान मानव स्वयं है। मानव स्वयं इन आवश्यकताओं को जन्म देता है। इसलिए ये आवश्यकताएँ एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। फलस्वरूप इन आवश्यकताओं को पूरा करने के साधन के रूप में काम आने वाली संस्कृति की विभिन्न इकाइयाँ एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। इस अन्तर्सम्बन्ध का आधार मानव की आवश्यकताएँ हैं। किसी भी संस्कृति का प्रकार्य मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।मैलिनोवस्की का मानना है कि संस्कृति का कोई भी तथ्य या इकाई 'प्रकार्यहीन' (Functionlesg) नहीं होती। संस्कृति का प्रत्येक तत्व किसी-न-किसी कार्य को करने के लिए होता है। उसका अस्तित्व उसी समय तक बना रहता है जब तक वह सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था में कोई-न-कोई कार्य करता रहता है। चूँकि सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था को बनाए रखने में प्रत्येक सांस्कृतिक तत्व का कोई-न-कोई प्रकार्य होता है, इसीलिए संस्कृति के प्रत्येक तत्व का एक-दूसरे के साथ एक आन्तरिक व प्रकार्यात्मक सम्बन्ध होता है, जिसके फलस्वरूप ये विभिन्न सांस्कृतिक तत्व एक-दूसरे से पृथक नहीं, बल्कि एक-दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। फिर सब मिलकर संस्कृति को समग्रता प्रदान करते हैं। इस प्रकार मैलिनोवस्की के अनुसार सांस्कृतिक संगठन का आधारभूत कारण

संस्कृति की प्रत्येक इकाई द्वारा किया जाने वाला प्रकार्य है। यही मौलिनोवस्की का प्रकार्यवाद या प्रकार्यवादी सिद्धान्त या दृष्टिकोण है।

रेडक्लिफ ब्राउन ने हरबर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) व एमील दुर्खीम (Emile Durkheim) हे प्रभावित होकर 'प्रकार्यवाद की व्याख्या दी। एल्विन डब्ल्यू. गोल्डनर (Alwin W. Gouldner) का कहना है, मैलिनोवस्की तथा रैडक्लिफ ब्राउन को दुर्खीम तथा आधुनिक समाजशास्त्रीय प्रकार्यवाद के बीच का पुल कहा जाता है।("Malinowski and Radcliffe Brown are the bridge between Durkheim and Modern sociological functionalism.") रेडक्लिफ ब्राउन का कहना है कि प्रकार्य (Function) शब्द को प्राणिशास्त्र से लिया गया है। इन्होंने सामाजिक जीवन की तुलना प्राणिशास्त्रीय जीवन से है। इन्होंने इस तुलना का प्रयोग हर सम्बोधन को समझाने में किया है। लेकिन उनका मानना है कि यह तुलना सदैव सजग न होकर समल कर करने की आवश्यकता है। इस तुलना के आधार पर संरचना तथा प्रकार्य सम्बोधों को प्रतिपादित किया।रेडक्लिफ ब्राउन का कहना है कि एक प्राणी कोशिकाओं (Cells) तथा अन्तरीय तरल पदार्थ (Intestinal Fluids) का मिश्रण है, जो एक-दूसरे से एक जीवित पूर्णता के रूप में समन्वित है। प्राणी एक पूर्णता है। प्राणी के जो भी भाग हैं, वे पूर्णता के अंग है। इन अंगों का आपस में निश्चित सम्बन्ध है। सम्बन्धों के जिस तन्त्र (System) के द्वारा ये इकाइयाँ सम्बन्धित हैं, वह प्राणिशास्त्रीय संरचना (Organic Structure) कहलाता है। जब तक कोई प्राणी जीवित रहता है, यह संरचना बनी रहती है। इकाइयाँ परिवर्तित होती रहती हैं, परन्तु सम्बन्ध स्थायी रहते हैं। जिस प्रक्रिया के द्वारा यह संरचनात्मक निरन्तरता (Structural Continuity) स्थापित रहती है, उसे जीवन कहते हैं।रैडक्लिफ ब्राउन का कहना है कि यदि संरचना की निरन्तरता बनी रहे, तो प्राणी का जीवन भी बना रहेगा। इसे संरचना का प्रकार्य करते रहना कहते हैं। प्रत्येक अंग कोई-न-कोई प्रकार्य करता है. जिससे सम्पूर्णता या. सावयव (Organism) का अस्तित्व बना रहता है। उदाहरणार्थ- साँस लेना, यह पूर्णता को बनाये रखने के लिए है। पेट पाचन क्रिया का प्रकार्य करता है। यह सब प्रकार्य शरीर को बनाये रखने के लिए है।रेडक्लिफ ब्राउन ने क्रिया (Activity) और प्रकार्य (Functions) में अन्तर किया है। उदाहरणार्थ- पेट की क्रिया है कि वह जठरीय रस (Gastric Fluid) को पृथक करे। इस क्रिया का प्रकार्य यह है कि वह भोजन की प्रोटीन को इस रूप में ला दे कि वह पचायी जा सके व रक्त के द्वारा वितरित की जा सके। इस प्रकार वह अंग-अंग के पास पहुँच जाती है और प्राणी को बचाये रखती है।रेडक्लिफ ब्राउन ने प्राणी के विश्लेषण से जुड़े तीन तत्वों का उल्लेख किया है- (1) आकृति विज्ञान या संरचना शास्त्र (Morphology)-किस प्रकार की प्राणिशास्त्रीय संरचनायें पाई जाती है। उनमें क्या समानताएँ है, क्या भिन्नताएं हैं और उनका वर्गीकरण कैसे किया जा सकता है। (2) शारीरिक क्रिया विज्ञान (Physiology)- प्राणीशास्त्रीय संरचनाएँ किस प्रकार प्रकार्य करती है। (3) उद्विकास (Evolution)-नये प्रकार के प्राणी किस प्रकार अस्तित्व में आते हैं।रैडक्लिफ ब्राउन (Radcliffe Brown) ने सावयवी सादृश्यता को सामाजिक जीवन पर लागू किया है। उनका कहना है कि प्राणी की तरह समाज भी होता है। समाज की भी सरचना होती है.. परन्तु जिसे सामाजिक संरचना कहा जाता है। किसी भी समाज में जो मानव होते हैं, वे समाज की इकाइयों है और उनके सम्बन्धों पर सामाजिक संरचना आधारित रहती है। इकाइयाँ बदल सकती हैं. सामाजिक संरचना बनी रहती है और समाज जीवित रहता है। सामाजिक संरचना व्यक्तियों की भूमिकाओं से सम्बन्ध रखते हैं। रेडक्लिफ ब्राउन का कहना है कि समुदाय का सामाजिक जीवन सामाजिक संरचना के प्रकार्यो की निरन्तरता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। समाज के किसी भी अंग की क्रिया का प्रकार्य वह भाग होता है जो सामाजिक जीवन के एक सम्पूर्णता के रूप में करता है। हम यह भी कह सकते हैं कि यह प्रकार्य संरचनात्मक निरन्तरता को बनाये रखने में योग है। प्रकार्य की परिभाषा में सामाजिक संरचना की अवधारणा अत्यन्त आवश्यक है।प्रकार्य की परिभाषा के सन्दर्भ में ब्राउन ने लिखा है, प्रकार्य वह योगदान है, आंशिक क्रिया है। जो उस समग्र के लिए की जाती है, जिसका वह अंश है। किसी विशेष सामाजिक रीति-रिवाज का कार्य वह योगदान है, जिसे वह समग्र सामाजिक व्यवस्था के रूप में सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को देता है।प्रकार्यात्मक एकता पर बाउन ने विशेष बल दिया है। उन्होंने प्रकार्यात्मक एकता को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिभाषित करते हुए लिखा है, "यह वह दशा है जिसमें एक सामाजिक तत्व के समस्त भाग पर्याप्त संतुलन में प्रकार्य करते हैं और ऐसे संघर्ष उत्पन्न नहीं करते, जो नियन्त्रित न किये जा सकते हो।रेडक्लिफ ब्राउन का मानना था कि आकृति विज्ञान या संरचनाशास्त्र (Morphology), शारीरिक क्रियाविज्ञान (Physiology) एवं उद्विकास (Evolution), जो प्राणी के विश्लेषण से जुड़ा है, सामाजिक जीवन पर भी लागू होता है। ये निम्न है

(1) सामाजिक संरचना शास्त्र (Social Morphology)- किस प्रकार की सामाजिक संरचनाएँ पाई जाती हैं, उनमें क्या समानताएँ व भिन्नताएँ हैं और उनका वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है।

(2) सामाजिक शारीरिक क्रियाविज्ञान (Social Physiology) प्रकार्य करती है। सामाजिक संरचनाएँ किस प्रकार (3) विकास (Development)-किस प्रकार नये प्रकार की सामाजिक संरचनाएँ अस्तित्व में आती है।

रेडक्लिफ ब्राउन का ऐसा कहना कि प्राणी और समाज में दो स्थलों पर तुलना नहीं की जा सकती है। ये स्थान निम्न हैं-

(1) प्राणी में प्राणिशास्त्रीय संरचना (Organic Structure) को प्रकार्य से पृथक कुछ अंशों में से देखा जा सकता है। इसीलिए शारीरिक क्रियाविज्ञान (Physiology) से स्वतन्त्र आकृति विज्ञान या संरचनाशास्त्र (Morphology) सम्भव है। परन्तु मानव समाज में सामाजिक संरचना को केवल उसके प्रकार्यों में ही देखा जा सकता है। इसीलिए सामाजिक शारीरिक क्रिया विज्ञान (Social Physiology) से स्वतन्त्र होकर सामाजिक संरचनाशास्त्र (Social Morphology) नहीं स्थापित की जा सकती।

(2) प्राणी अपने जीवन काल में अपनी संरचना के प्रकार को नहीं परिवर्तित कर सकता। समाज में इस प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। वे जीवित रहते हुए अपनी संरचना के प्रकार परिवर्तित करते रहते हैं।

आधुनिक सामाजिक चिंतकों में अमेरिकन समाजशास्त्री टालकॉट पारसन्स का नाम प्रकार्यवाद का पर्याय बन गया है। ए. डब्ल्यू. गोल्डनर (A. W. Gouldner) ने लिखा है, "आज कोई ऐसा अकादमिक सिद्धान्तशास्त्री नहीं है-निश्चय ही न तो होमन्स और गोफमैन-जो आधे विश्व पर प्रभाव रखता हो अथवा टालकॉट पारसन्स की तरह सैद्धान्तिक संगति प्रकट करता हो।"टालकॉट पारसन्स का मानना रहा कि समाज का वास्तविक अध्ययन संरचनात्मक प्रकार्यात्मक (Structural-Functional) दृष्टिकोण से ही सम्भव है। इसका कारण यह है कि समाज की वास्तविकताओं को तब तक ठीक से नहीं समझा जा सकता, जब तक उस व्यवस्था को बनाने वाली इकाइयों के प्रकार्यों को न समझा जाय। अतः इस रूप में सामाजिक व्यवस्था के उन विभिन्न प्रकार्यात्मक तत्वों को देखना चाहिए जो कि उस व्यवस्था के अधिकांश सदस्यों की कम-से-कम न्यूनतम प्राणिशास्त्रीय या सामाजिक मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इन तत्वों की क्रियाशीलता में ही सामाजिक व्यवस्था की क्रियाशीलता का रहस्य छिपा होता है।सामाजिक संरचना व व्यवस्था के अस्तित्व एवं निरन्तरता के लिए समाज द्वारा निर्धारित वे क्रियाकलाप, जो कि समाज की विभिन्न इकाईयाँ करती हैं, प्रकार्य कहलाते हैं। टालकॉट पारसन्स के अनुसार सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए अनेक सामाजिक नियम होते हैं और इनमें से सभी नियमों के कुछ-न-कुछ सामाजिक प्रकार्य अवश्य होते हैं। उन्होंने इसे व्यावसायिक नियमों के माध्यम से स्पष्ट किया है। व्यावसायिक नियमों में व्यवसायों के कुछ विशेष प्रकार्य होते हैं। जैसे—उस व्यवसाय में प्रवेश की दिशाओं को निर्धारित करना, उसमें काम करने वाले सदस्यों के अधिकारी एवं कर्तव्यों को परिभाषित करना, व्यवस्थापक एवं कर्मचारी के बीच के सम्बन्धों को निश्चित करना, आदि-आदि। इसके अतिरिक्त इन नियमों का यह भी प्रकार्य है कि वे उस व्यवसाय से सम्बन्धित विभिन्न व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों तथा अन्तःक्रियाओं को सुविधाजनक बनाते है। टालकॉट पारसन्स ने प्रकार्यात्मक सन्दर्भ में समाज व्यवस्था या सरचना का अध्ययन करने का सुझाव दिया। उनका कहना है कि यदि हम सामाजिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संरचना या व्यवस्था का विश्लेषण करे हमें स्पष्ट ज्ञात होगा कि उसके अन्तर्गत असख्य परस्पर सम्बन्धित इकाईयों है जो सम्पूर्ण व्यवस्था को एक निश्चित प्रतिमान प्रदान करती है। पारसन्स के अनुसार इन असख्य अन्तःसम्बन्धित इकाइयां का अध्ययन करने का एक सरल एवं उत्तम तरीका यह है कि उन्हें एक सामान्यीकृत सरचनात्मक प्रकार्यात्मक व्यवस्था (Generalised Structural-Functional System) के रूप में देखा। जाय। इस व्यवस्था के अनुसार उन असख्य परस्पर सम्बन्धित इकाईयों को सामान्य के आधार पर कुछ श्रेणियों में बाँट दिया जाता है और फिर सम्पूर्ण व्यवस्था के सन्दर्भ में उनका अध्ययन किया जाता है। ये सरचनात्मक श्रेणियों बहुत कुछ स्थिर होती हैं और इसका सम्बन्ध सामाजिक व्यवस्था के गतिशील तत्वों से होता है। इसी सम्बन्ध के सन्दर्भ में व्यवस्था का अध्ययन किया जाना चाहिए। इस प्रकार के अध्ययन कार्य में 'गतिशील प्रकार्यात्मक श्रेणियों की भी आवश्यकता होती है जो कि उन महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है, जिनके द्वारा संरचनायें व्यवस्थित रहती हैं या अव्यवस्थित हो जाती हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि गतिशील प्रकार्यात्मक श्रेणियों के सन्दर्भ में ही संरचना का अध्ययन उचित है, क्योंकि ये प्रकार्य ही सामाजिक व्यवस्था व संरचना को संगठित रखने की दिशा में या विघटित करने की दिशा में अपना योगदान करते हैं। विघटित करने की स्थिति में उसके योगदान को अकार्यात्मक कहना उचित होगा। अतः पारसन्स का कहना है कि एक विकसित समाज व्यवस्था को गतिशील व्यवस्था के रूप में ही देखना होगा और उस सम्पूर्ण व्यवस्था से सम्बन्धित समस्त विशिष्ट अवस्थाओं तथा प्रक्रियाओं के प्रकार्यात्मक सन्दर्भ में ही समाज व्यवस्था या संरचना का अध्ययन करना उचित होगा।टालकॉट पारसन्स का कहना है कि प्रत्येक सामाजिक या संरचना में बने रहने के लिए 'प्रकार्यात्मक पूर्व आवश्यकताएँ (Functional Pre-Requisites) होती हैं। ये वे आवश्यकताएँ है जो सदस्यों के सामाजिक व्यवस्था के प्रति प्रकार्यों से सम्बन्धित होती हैं। यदि ये आवश्यकताएँ पूरी न हो, तो सामाजिक व्यवस्था का निर्माण नहीं हो सकता, इसलिए ये अनिवार्य दशाएँ हैं। प्रमुख प्रकार्यात्मक पूर्व-आवश्यकताएँ निम्न है-

(i) सामाजिक आदर्श-नियमों का पालन (Obedience of Social Norms)- आदर्श नियम व्यवहार को परिभाषित व प्रतिमानित करते हैं। सबसे प्रमुख प्रकार्यात्मक पूर्व-आवश्यकता यह है कि किसी भी सामाजिक व्यवस्था के सदस्य सामाजिक आदर्श नियमों का पालन करने को तैयार हो। इन्हें दो भागों में विभाजित किया जाता है- प्रथम, वे जो सकारात्मक कर्त्तव्यों को निर्धारित करते हैं। सकारात्मक आदर्श नियमों को सम्बन्धात्मक (Relational) कहते हैं, क्योंकि वे कर्त्ताओं की भूमिका का उपसमूहों के बीच सम्बन्धों का निर्धारण करते हैं। द्वितीय, वे आदर्श नियम होते हैं जो नकारात्मक होते हैं। ये कर्त्तव्यों और कार्य करने की सीमाओं को निर्धारित करते हैं। ऐसे आदर्श नियमों को नियामक आदर्श नियम (Regulative Norms) कहा जाता है।

(ii) सामाजिक नियन्त्रण के क्रिया-तन्त्र (Mechanism of Social Control) वे संयन्त्र जिनके द्वारा सदस्यों के व्यवहार को नियन्त्रित किया जाता है, पारसन्स के अनुसार, सामाजिक नियन्त्रण के क्रिया-तन्त्र कहलाते हैं। कर्ताओं के व्यवहार पर नियन्त्रण के लिए हम समाज में सामाजिक नियन्त्रण के क्रियातन्त्र होते हैं। कुछ नियामक संस्थाएँ (Regulative Institutions) कर्ताओं के व्यवहार को नियन्त्रिक करती हैं। ये मूल रूप से दो होते हैं प्रथम, अनौपचारिक (Informal)-प्राथमिक समूहों में अधिकतर अनौपचारिक सामाजिक नियन्त्रण के तन्त्र ही प्रभावी होते है। द्वितीय, औपचारिक (Formal)-द्वितीयक समूहों में औपचारिक सामाजिक नियंत्रण के तन्त्र ही अधिक प्रभावी होते हैं।

(iii) सकारात्मक क्रिया के प्रति रुचि (Interest towards Positive Action) यह प्रकार्यात्मक पूर्व-आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण है। कर्त्ताओं में सकारात्मक क्रिया के प्रति रुचि हो, वे सामाजिक व्यवस्था को मन से स्वीकार करते हों। इससे उन्हें समाज के नियमों के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रवृत्त करता है और इससे सामाजिक व्यवस्था का सन्तुलन बना रहता है।

टालकॉट पारसन्स का मानना है कि सामाजिक व्यवस्था के किसी भी अंग को सम्पूर्ण से अलग नहीं समझा जा सकता, क्योंकि इन अंगों में एक प्रकार्यात्मक सम्बन्ध होता है। इस सम्बन्ध के कारण सम्पूर्ण व्यवस्था के सन्दर्भ में ही उनको समझना सम्भव है। यही

कारण है कि पारसन्स ने सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को अपने अध्ययन का आधार माना है ताकि उसके अलग-अलग अंगों तथा उनके बीच पाये जाने वाले प्रकार्यात्मक सम्बन्धों को स्पष्ट किया जा सके।टालकॉट पारसन्स का कहना है, किसी भी सामाजिक व्यवस्था बनाने वाले अनेक वैयक्तिक कर्त्ता होते हैं जो कि परिस्थिति विशेष में एक-दूसरे के साथ अन्तक्रिया करते रहते हैं और जिनके पारस्परिक सम्बन्ध सांस्कृतिक तौर पर निर्धारित संरचना व सहयोगी प्रतीकों की एक व्यवस्था के सन्दर्भ में परिभाषित व परिवर्तित होते रहते हैं। अतः स्पष्ट है कि सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का अस्तित्व समाज के अनेक वैयक्तिक कर्त्ताओं के प्रकार्यात्मक अन्तसम्बन्धों तथा अन्तः क्रियाओं पर निर्भर करता है। फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था में इन कर्त्ताओं के प्रकार्यों की अवहेलना नहीं की जा सकती। इस रूप में सामाजिक व्यवस्था या संरचना व प्रकार्य में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

रॉबर्ट के मर्टन ने वर्तमान शताब्दी में प्रकार्यवादी सम्प्रदाय को काफी प्रभावित किया है। साथ ही उनके विचारों का गहरा प्रभाव विशेषकर बाद के समाजशास्त्रियों पर भी पड़ रहा है। फलस्वरूप अन्य समाजशास्त्रियों ने सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। रॉबर्ट के. मर्टन ने अपनी पुस्तक 'सोशल थ्योरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर' (Social Theory and Social Structure) में प्रकार्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये। प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण का सुदृढ़ विश्लेषण करने के साथ-साथ यह भी चर्चा की है कि समाजशास्त्र में एक शब्द, अधिक अवधारणाओं (Single Term, Diverse Concept) तथा एक अवधारणा अधिक शब्द (Single concept, Diverse Tem) की समस्या पाई जाती है। मर्टन ने व्याख्या दी है कि समाजशास्त्र में प्रकार्य (Function) शब्द का उपयोग अनेक अर्थ में किया जाता है। कभी इस शब्द का अर्थ किसी पदाधिकारी या कर्मचारी को 'भूमिका' होती है। कभी इस शब्द का उपयोग किसी 'आयोजन' के लिए किया जाता है। इसी प्रकार कभी 'गणितीय' अर्थ में, कभी 'जैविकीय तथा सामाजिक प्रणाली के संदर्भ में तो कभी उद्देश्य या उपयोगिता के अर्थ में तो कभी व्यवसाय के अर्थ में इसका उपयोग किया जाता है। मटन का कहना है कि किसी वैज्ञानिक अध्ययन के लिए शब्द या अवधारणा का सामान्यीकरण आवश्यक है। इन्होंने स्वयं प्रकार्य की व्याख्या एक निश्चित अर्थ में दी है। (अ) प्रकार्य का अर्थ (Meaning of Functions)-रॉबर्ट के मर्टन ने प्रकार्य को परिभाषित करते हुए लिखा है, "प्रकार्य वे निरीक्षित परिणाम है जो कि एक व्यवस्था विशेष के अनुकूलन या सामंजस्य को सम्भव बनाते हैं।" ("Functions are those observed consequences which make for the adaptation or adjustment of a given system.") इस परिभाषा से स्पष्ट है कि वह प्रकार्य जो दिखाई पड़ती है तथा जो व्यवस्था में अनुकूलन या सामंजस्य में सहायक होते हैं, प्रकार्य कहे जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, किसी भी उद्योग में जो उत्पादन होता है, यह उद्योग के कार्यक्रम का वह प्रभाव है जो दिखाई पड़ता है तथा उद्योग की व्यवस्था को बनाये रखने या अनुकूलन की प्राप्ति में सहायता देता है, इसलिए इस उत्पादन को प्रकार्य कहा जा सकता है। (ब) प्रकार्य के प्रकार (Types of Functions)-रॉबर्ट के मर्टन ने प्रकार्य के दो प्रकार की व्याख्या दी है, जो प्रकट प्रकार्य तथा अप्रकट प्रकार्य के नाम से जाने जाते हैं। ये निम्न रूप में है-

(i) प्रकट प्रकार्य (Manifest Functions)- रॉबर्ट के मर्टन ने प्रकट प्रकार्य को परिभाषित करते हुए लिखा है, "प्रकट प्रकार्य वे निरीक्षित परिणाम है जो कि व्यवस्था के अनुकूलन या सामंजस्य में अपना योगदान देते हैं और जो कि व्यवस्था में अंश ग्रहण करने वालों के द्वारा मान्य तथा इच्छित होते हैं।इस कथन से तीन बातों पर प्रकाश पड़ता है—(क) ये एक प्रकार के परिणाम होते हैं। (ख) ये किसी व्यवस्था के प्रति अनुकूलन या समंजन पर बल देते हैं। (ग) इन प्रकार्यों को व्यवस्था के सहभागी लोग स्वीकार करते हैं तथा अपने व्यवहार में अपनाते हैं।

(ii) अप्रकट प्रकार्य (Latent Functions) - रॉबर्ट के मर्टन ने अप्रकट प्रकार्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है, "अप्रकट या अन्तर्निहित प्रकार्य वे सह-सम्बन्धी परिणाम होते हैं जो न तो पूर्व-निश्चित होते हैं और न ही मान्य होते हैं।" ("Latent functions correlatively, being those which are neither intended nor recognized.")इस परिभाषा से स्पष्ट होता है-(क) ये कुछ सह-सम्बन्धी

परिणाम होते हैं। इन्हें सापेक्षिक अर्थ में तथा एक प्रकार्य के साथ दूसरे को सह-सम्बन्धित करके ही समझा जा सकता है। (ख) ये परिणाम पहले से ही निश्चित नहीं होते हैं। (ग) ये परिणाम मान्य नहीं होते। इस प्रकार अप्रकट प्रकार्य प्रकट प्रकार्य के विपरीत स्थिति है।रॉबर्ट के मर्टन ने प्रकट व अप्रकट प्रकार्य को एक उदाहरण के द्वारा समझाने का प्रयास किया है। इन्होंने 'भारतीय होपी'का उदाहरण देते हुए लिखा है कि होपी लोग सूखे के समय वर्षा लाने के लिए सामूहिक रूप से धार्मिक नृत्य एवं उत्सव करते हैं। इससे वर्षा होगी या नहीं, लेकिन इससे सामाजिक एकता एवं मनोरंजन का लाभ अवश्य मिल जाता है। साथ ही यह प्रथा जारी रहती है। इस प्रकार इस सामूहिक नृत्य का प्रकट प्रकार्य 'वर्षा लाना' होता है, जबकि इसका अप्रकट प्रकार्य सामूहिकता में वृद्धि करना, मनोरंजन प्रदान करना तथा प्रथा की निरन्तरता बनाये रखना है। इस प्रकार प्रकट व अप्रकट प्रकार्य की धारणा से स्पष्ट होता है कि प्रकट किसी इकाई का एक इच्छित एवं स्वीकृत सम्भावित परिणाम है, जबकि अप्रकट प्रकार्य आन्तरिक रूप से हमेशा क्रियाशील रहता है। लेकिन प्रायः व्यक्तियों को इसका ज्ञान बहुत कम होता है। इसके बावजूद भी प्रकट प्रकार्य और अप्रकट प्रकार्य एक-दूसरे से पृथक नहीं रहते। एक व्यवस्था में एक प्रकार्य कुछ सदस्यों के लिए प्रकट प्रकार्य होते हैं, तो कुछ के लिए अप्रकट।

(स) अकार्य (Dysfunctions) रॉबर्ट के मर्टन ने प्रकार्यों के साथ अकार्यों की भी व्याख्या दी है। अकार्य को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा है, "अकार्य वे निरीक्षित परिणाम हैं जो कि व्यवस्था के अनुकूलन या सामंजस्य को कम करते हैं।"("Dysfunctions are those observed consequences which lessen the adaptation or adjustment of the system.")इसका अर्थ यह है कि वे प्रभाव जो देखे जा सकते हैं और जो व्यवस्था में अनुकूलन व सामंजस्य को कम करते हैं, अकार्य कहलाते हैं। उदाहरणस्वरूप, यदि समाज में स्वतन्त्रता और समानता के मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता हो, परन्तु समाज में जातीय आधार पर भेदभाव पाया जाय तो इस भेदभाव को अकार्य कहा जायेगा। साथ ही यह सामाजिक व्यवस्था में पाये जाने वाले अनुकूलन या सामंजस्य में कमी लाता है। मर्टन का कहना है कि अकार्य के कारण सामाजिक व्यवस्था में तनाव, दबाव तथा संघर्ष की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जिसका सामाजिक ढाँचे पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

(द) अकार्यों के प्रकार (Types of Dysfunctions) रॉबर्ट के मर्टन के अकार्यों को दो भागों में बांटा जा सकता है-प्रकट अकार्य व अप्रकट अकार्य। ये निम्न रूप में हैं (i) प्रकट अकार्य (Manifest Dysfunctions)- वह अकार्य जो उद्देश्य के अनुसार यानि अपेक्षित एवं स्वीकृत होता है, उसे प्रगट अकार्य कहा जाता है। (ii) अप्रकट अकार्य (Latent Dysfunctions) वह अकार्य जो उद्देश्य से भिन्न एवं जिसे स्वीकृति नहीं मिलती हो, उसे अप्रगट अकार्य कहा जाता है।प्रकट या अप्रकट अकार्य को एक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। किसी उद्योग में यदि मजदूर संघ इस उद्देश्य के साथ मजदूरों की हड़ताल कराती है कि कुछ दिनों के लिए उत्पादन रुक जाय और उद्योग के मालिक को आर्थिक घाटा हो। यदि इस हड़ताल के कारण कुछ दिनों के लिए उत्पादन रुक जाता है और मालिक को आर्थिक घाटा होता है, तो यह प्रभाव उद्देश्य के अनुसार होने के कारण प्रकट प्रकार्य कहा जायेगा। यदि इस हड़ताल के परिणामस्वरूप मजदूरों को मिलने वाले लाभ के बदले हानि हो या कुछ मजदूर कार्य-मुक्त कर दिये जायँ, तो इसे अप्रकट अकार्य कहा जायेगा, क्योंकि इस तरह के परिणाम की न कभी अपेक्षा की गई थी और न श्रमिक संघ ने स्वीकृति दी थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

-Herskovits, M. J.: Man and his works. Alfred A. Knops, New York, 1956

- Inkeles, Alex: What is Sociology? Prentice Hall of India, Private Limited, New -Delhi, 110001.

- Jones, M. K.: Basic Sociological Principal: Ginn and Co., New York, 1949.

- Johnson. H. M: Sociology: A Systematic Introduction, Allied Publishers Private Limited. Bombay, India, 1978.

-King, Davis and Marvin Koller Foundation of Sociology, Rinehati Press, San Francisco, 1975.

-Levy, M. J.: The Structure of Society, Princeton University, New Jersey, 1952.

-Loomis, C. P.: Social System, D. Van Nas Trade Co., New York, 1960.

-Mantindale, Don : The Nature and Types of Sociological Theory, London, 1961.

- Merton, Robert K.: Social Theory and Social Structure, The Free Press, Glencoe,

1962.

-Merton, Robert K.: Sociology Today, Basic Books, New York, 1959.

-Parsons, Talcott: Essays in Sociological Theory, The Free Press, Glencoe, Illinois,1958.

-Spencer, Herbert: The Principles of Sociology, vol, Appleton century, New York,1997

-Weber, Max: The Theory of Social and Economic Organization, Oxford University1897.

- Vine, M. W.: An Introduction to Sociological Theory, Longmans, Green and Co., New

-Weber, Max: From Max Weber: Essays in Sociology. Oxford University Press, New York, 1946,Press, New York, 1947.

- चौहान, ब्रजराज : समाज विज्ञान के प्रेरक स्रोत, ए.सी. ब्रदर्स, उदयपुर, 1994

-मुकर्जी रवीन्द्रनाथ : उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, सरस्वती सदन दिल्ली, 1977।

- सिंह, गोपी रमण प्रसाद : समाजशास्त्रीय चिन्तन के आधार मिश्रा ट्रेडिंग कॉरपोरेशन, वाराणसी,2007 |